मैत्रेयीकृति

हिन्दी ई-पत्रिका

विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा

जनवरी - जून 2019

अंक-1

वर्ष-1

शिक्षा अनुशासन आत्मविश्वास परिश्रम सत्य एकता विद्यार्थी प्रयास प्रतिष्ठा संयम संवेदनशीलता ज्ञान प्रेरणा प्रेम मर्यादा शिक्षक स्त्री माँ

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई-पत्रिका)

मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

(NAAC द्वारा ए ग्रेड प्राप्त)

मनीषा मीणा, निधि मोहन, डा.हरित्मा चोपड़ा (प्राचार्या), डा.पुष्पा गुप्ता, अंशुल, सोनाली

<u>संरक्षण एवं परामर्श</u>

डॉ. हरित्मा चोपड़ा

प्राचार्या

<u>संपादन</u>

डॉ.पुष्पा गुप्ता

हिंदी विभाग

<u>सह संपादन</u>

सोनाली डबास

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

<u>तकनीकी संपादन</u>

अंशुल

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

निधि मोहन

बी.ए.प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

<u>आवरण पृष्ठ</u>

मनीषा कुमारी मीणा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

शुभकामना संदेश

प्रयोग और प्रगति दोनों समानांतर चलते रहते हैं और फिर आज तो हमारे पास तकनीक के रूप में एक बहुत बड़ा वरदान भी उपलब्ध है।तकनीक की इसी शक्ति का उपयोग करते हुए पिछले कई वर्षों से कालेज अकादमिक के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी लगातार नये प्रयोग कर रहा है और प्रगति की नयी ऊंचाईयों की ओर बढ़ रहा है।हिन्दी में 'ई'पत्रिका भी इसी तरह का एक प्रयास है, जिसके माध्यम से सभी संभावनाशील विद्‍यार्थियों को अभिव्यक्ति का एक नया मंच उपलब्ध कराने की सार्थक पहल की गयी है।

शुभकामनाओं सहित

डा.हरित्मा चोपड़ा

प्राचार्या

संपादकीय

आज के प्रतियोगी युग में जीवन और उसे जीने की पद्धति दोनों ही जटिल हो गई हैं। स्वयं को समाज और बाजार के अनुरुप बनाते हुए विद्यार्थियों के जीवन में भी तनाव और दबाव की उपस्थिति दिखाई देती है। अतः शिक्षा-संस्थानों का दायित्व भी बढ गया है। पढाई के साथ अभिव्यक्ति के माध्यमों की ओर बच्चों का रुझान उन्हें अपनी छिपी योग्यताओं से परिचित कराने के साथ-साथ आत्मविश्वास से परिपूर्ण करता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंदी भाषा में 'ई'पत्रिका 'मैत्रेयीकृति का शुभारम्भ किया गया है। इस पत्रिका की विशेषता इस का विद्यार्थी केन्द्रित होना है। यह केवल 'विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा' की थीम पर काम कर रही है। भविष्य में इस का स्वरूप अन्तर-अनुशासनिक बनाने की दिशा में प्रयास जारी रहेगा। रचनाओं का संपादन करते हुए मौन प्रतिभाशाली बच्चों से परिचित होना एक सार्थक और अद्भुत अनुभव रहा।

पत्रिका को आप सब को सौंपने से पहले मैं आभार व्यक्त करती हूँ अपने विभाग का, जहाँ मेरे विचार को समर्थन मिला। फिर अगला आभार डा. सुरिंदर कौर का, जिन्होंने इस विचार की संस्तुति कर आगे बढाया। प्राचार्या डा.हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार और कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग और प्रोत्साहन से ही इस पत्रिका ने आकार ग्रहण किया है। अंत में इस पत्रिका से जुड़े प्रत्येक रचनाकार, सज्जाकार विद्यार्थियों का हार्दिक आभार, जिनके कारण इस पत्रिका का अस्तित्व संभव हुआ।

डा.पुष्पा गुप्ता

हिन्दी विभाग

छात्र संपादकीय

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे हिंदी विभाग द्वारा हिंदी में पहली बार ई-पत्रिका का प्रारम्भ किया जा रहा है। मुझे लगता है कि यह पत्रिका मेरे लिए एक सुअवसर की तरह है क्योंकि पहले दो वर्षों में मैं केवल पढ़ने के लिए कॉलेज आती रही। तीसरे वर्ष में अचानक मन की भावना से प्रेरित होकर मैंने निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया, जो मेरे साथ-साथ मेरी कक्षा की लड़कियों के लिए भी एक आश्चर्य था। मेरी उपलब्धि और कक्षा में मेरी चुप्पी को देखते हुए मेरी एक अध्यापिका ने कहा कि "चुप रहने वालों की अभिव्यक्ति अक्सर सशक्त होती है। अतः तुम लिखकर अपनी बात कहो।" तभी ई-पत्रिका के लिए रचनाएं मांगी गई और मैंने भी अपनी कविताएं भेज दीं। उन्हीं कविताओं ने मुझे ई-पत्रिका के साथ सह संपादन से जोड़ा। पत्रिका के लिए काम करते हुए बहुत सी रचनाएं पढ़ने को मिलीं। पुष्पा मैम के साथ मिलकर रचनाओं में आंशिक सुधार किया गया जिससे बहुत सारी अच्छी रचनाओं से परिचय हुआ।

अपने इस अनुभव के बाद मैं कहना चाहती हूँ कि सभी के भीतर प्रतिभा के असंख्य बीज छिपे हुए होते हैं। हमें अपने संकोच और चुप्पी को छोड़कर सभी गतिविधियों में अपनी सक्रिय उपस्थिति दिखाने का प्रयास करना चाहिए। ताकि हम अपनी योग्यता से एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकें और स्वयं के भारतीय होने पर गर्व कर सकें।

सोनाली डबास

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

1. मेरी प्रिय भाषा हिंदी	चेतना अलोरिया	8
2. मैं एक बेटी हूँ	सोनी शाह	8
3. युग की दास्तां	अंशुल	9
4. परिणाम	गुरप्रीत कौर	9
5. आज भी याद हैं मुझे	प्रीति शर्मा	9
6. लहर	सोनाली डबास	10
7. यादें	रानी खातून	11
8. लक्ष्मी	प्रियंका	11
9. लक्ष्य	पूजा	12
10. बारिश	आरती	12
11. विद्यालय	सोनम	13
12. मेरे स्वप्न	शीतल	13
13. काश ये ज़िंदगी एक किताब होती	अंशुल	14
14. ज़िन्दगी	रुख़सार	14
15. मन की बात	करिश्मा	15
16. ज़िन्दगी का गणित	ममता कुमारी	15
17. मोहब्बत	मोना	16
18. मन की स्थिति	छवि	16
19. मंजिल आसान नहीं	वंदना मिश्रा	17
20. काश	आरुषि शर्मा	17
21. वक़्त ने सिखाया है	प्रीति शर्मा	18
22. प्रदूषित दिल्ली	नज़मा	18
23. क्या लिखूं	करुणा	19
24. कुछ समझ नहीं आ रहा	नेहा बिस्वास	19
25. ज़िंदगी की अनोखी तस्वीर	अंशुल	20
26. मैं उड़ना चाहती हूँ	शबनम अहिरवार	20
27. माँ का प्यार	शीतल	21
28. यादें	प्रीति शर्मा	21

29.	ऐसी रात	सोनाली डबास	22
30.	कलयुग आ गया है	रितु तंवर	22
31.	कुछ, जो है अनकहा	सोनाली डबास	23
32.	सच हैं जनाब	ममता कुमारी	23
33.	मुस्कान	मनीषा	24
34.	नारी तुम विश्वास जगत का	ममता कुमारी	25
35.	याद	लेखिका	25
36.	क्या लिखूँ	नूतन	26
37.	एक दर्द ऐसा भी	ममता कुमारी	26
38.	सपने	गुंजन तिवारी	27
39.	कैसा ये मेहमान	मिताली रावत	27
40.	पिता	शिष्ठा	28
41.	पुस्तकालय	वन्दना	28
42.	रियलिटी शो का समाज पर प्रभाव	साक्षी पांडेय	29
43.	माँ	शुभ्रा त्रिवेदी	32
44.	कुछ रंग प्यार के ऐसे भी	नीतू कुमारी	33
45.	कॉलेज का पहला दिन	नीतू कुमारी	38

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।

आँखों से उमड़ कर चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।

- ***सुमित्रानंदन पंत***

!!मेरी प्रिय भाषा हिंदी!!

हिन्दी मेरी भाषा है,
हिन्दी मेरी आशा है।।
हिन्दी सरलता की रानी है,
यही सबकी ज़ुबानी है।।
हिन्दी में सब काम करेंगे,
उँचा हिन्दी का नाम करेंगे।।
हिन्दी मेरी भाषा है,
सबसे लोकप्रिय भाषा है।
हिन्दी की बोली हैं अनमोल,
एक ही शब्द के हैं
कई विलोम।।
हिन्दी से वचनबद्ध है,
पथ - यात्रा सफ़ल करेंगे।।
हिन्दी मेरी भाषा है,
नाम उँचा हिन्दी का करेंगे।।
जग मग ज्योति चले हिन्दी की,
यही मेरा विश्वास है।

चेतना अलोरिया

बी.ए.(प्रोग्राम)

द्वितीय वर्ष

!!मैं एक बेटी हूँ!!

सब कहते हैं,
मैं एक बेटी हूँ
धीमी आवाज में बोलना,
धर्म है मेरा
नज़रें नीची करके चलना,
कर्तव्य है मेरा
सबकी बाते सुनना,
पर खुद कुछ न कहना,
काम है मेरा।
क्योंकि सब कहते हैं,
मैं एक बेटी हूँ
बेटी हूँ तो क्या हुआ,
मैं भी तो इन्सान हूँ
मुझमें भी है कुछ चाह,
कुछ सपने
फिर क्यों मैं
उन्हें छुपा लूं
सबसे
फिर क्यों मैं उन्हें दबा दूँ
खुद के भीतर
मुझमें भी है वो साहस
अनंत आकाश में
ऊँची उड़ान भरने का,
अपने संजोए सपने
को सच करने का,
फिर क्यों, सब ये कहते हैं,
कि मैं एक बेटी हूँ।

सोनी शाह

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

तृतीय वर्ष

!!युग की दास्तां!!

बड़े घर - परिवार नहीं
ज्यादा पढ़ाई - तमीज नहीं
महंगी दवाई - सेहत नहीं
चंद्रमा छूना है - पडोसी का पता नहीं
आमदनी ज्यादा - सुकून नहीं
बौद्धिक स्तर उच्च - भावना नहीं
ज्ञान अच्छा - अक्ल नहीं
प्रेम संबध बहुत - सच्चा प्यार नहीं
फेसबुक के दोस्त बहुत - सच्चा दोस्त नहीं

अंशुल

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

द्वितीय वर्ष

!!परिणाम!!

परीक्षा हो गई है,
परिणामों का हैं इंतज़ार
पता नहीं कैसा होगा,
सभी अध्यापिकाएं हैं प्यारी,
सभी से हैं प्यार और सद्भाव
सभी को हैं चिंता हमारी ,
परिणामों का उन्हें भी हैं इंतज़ार
नववर्ष की हैं शुरूआत,
भगवान से हैं यही आस
कोई न हो निष्फल,
सभी का हो उत्थान

गुरप्रीत कौर

बी. ए. हिंदी (विशेष)

द्वितीय वर्ष

!!आज भी याद हैं मुझे!!

आज भी याद हैं,
मुझे तेरा मेरा साथ
आज भी याद हैं,
मुझे तेरी कही हर बात
आज भी अकेले में
याद तेरी आती है
आज भी इस भीड़ में
तन्हाई मुझे सताती है
आज भी तेरी आवाज़,
मुस्कुराहट मेरे
चेहरे पर लाती है
आज भी
तेरी तकलीफ देख,
मेरी आंखें नम हो जाती हैं
आज भी रहती है,
तेरी ख़ैरियत की ख़बर
बस रोक लेती हूँ खुद को
और कर रही हूँ सब्र
अब बस इंतज़ार हैं
उस दिन का
जब मिलेंगे दो यार
और भूलकर सब गिले
शिकवे रोयेंगे ज़ार ज़ार

प्रीति शर्मा

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!लहर!!

साधारण सी सुबह,
साधारण सी शुरुआत
मन में ख्याल आया
जा कर के अख़बार उठाया
ख़बरें तो बहुत सी थीं,
लेकिन नज़रें ठहर गईं,
कोने की एक खबर पर...
"दिल के दौरे से किसान की मौत "
कारण... ?
10,400 रुपए दाम लगा, मंडी में
उसके 27 क्विंटल प्याज़ का
बेटे ने हाल-ए-दर्द
कुछ यूं बयान किया
खबर आई, हवा मिली और...
दब गई आखिर लेकिन हालात ?
हालात हैं आज भी,...
बिल्कुल वहीं...
क्या कुछ नया था इसमें ?...
नहीं.. दशकों से यही तो हैं हाल,
इस देश के अन्नदाता का,
कितने ही जले इस आग में,
कितने कर्जे तले दबे,
कितनों ने खाई फांसी,
कोई हिसाब नहीं।
जब भी ऐसी कोई खबर सामने आती है
मीडिया इस मुद्दे को खूब भुनाती है
राजनेताओं की सियासत फिर गर्माती है
कुछ हमदर्दी के भाषण होते हैं,
फिर झूठे वादे होते हैं
कर्ज़ माफ़ी की
मीठी गोली खिलाई जाती है
फिर गद्दी हाथ आते ही
जल्द ही
अखबारों की रद्दी हो जाती है
फांसी की ये खबरें,...

देश के किसान की
ठीक उसी तरह
जैसे उठती हैं लहरें सागर में
किसी किनारे की तलाश में
किन्तु विलीन हो जाती हैं
कहीं बीच ही राह में, किन्तु
ये परिस्थितियों का सागर,
अड़ा रहता है
ना जाने कब तलक यूँ ही,
अटल, गहरा और वीरान
अपरिवर्तनशील सा
अब केवल इंतज़ार हैं
ऐसी एक लहर का...
जो कभी तो पाएगी अपना किनारा
और झकझोर देगी...
पत्थर की
इस सम्पूर्ण मानवता को।

सोनाली डबास
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!यादें!!

छोटी सी इस दुनिया में
बड़े-बड़े से ख्वाब हैं
कुछ करने की इच्छा
कुछ पाने का अरमान है।
कुछ करने का दम भी हैं
कुछ खोने का गम भी है
जो बीत गई वो यादें बनी
जो रह गई
वो फरियादें बनी ।
ज़िदगी ने बहुत कुछ दिया
जिसमें गम, मुसीबत,
यादो की संख्या ज़्यादा हैं
यह ज़िदगी ही तो हैं
जिसमें अपनो को
खोने का दर्द ज़्यादा हैं ।
समय-समय पर
बहुत कुछ मिला ,
मौसम बदले, साल बदले,
सोच भी बदल गई
ज़िदगी की पुस्तक में
सिर्फ यादें ही रह गई ।
उम्र से ज़्यादा तजुर्बा सीखा
यादो ने
यह भी सिखा दिया
क्या हैं हमारा, क्या पराया
ज़िन्दगी ने यह भी बता दिया ।

रानी खातून
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!लक्ष्मी!!

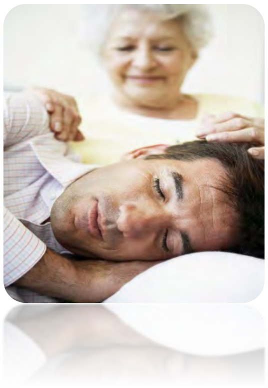

घर की लक्ष्मी होती हैं माँ
घर-घर नहीं होता
जिस घर में होती नहीं हैं
माँ
सही गलत का फर्क
समझाती हैं माँ
जीवन को सही दिशा देती हैं माँ
निरर्थक जीवन को
अर्थ देती हैं माँ
हमे निस्वार्थ प्रेम देती हैं माँ
त्याग की जीवन मूरत हैं माँ
ईश्वर का धरती पर अक्स हैं माँ
आज केवल घर तक
सीमित नहीं हैं माँ
विभिन क्षेत्रों में आज
सितारों सी चमक रही हैं माँ
अपने सुख और सपने
सब भुला देती हैं माँ
परिवार और बच्चों पर
अपना सब लुटा देती हैं माँ
हमे खुश देखकर
मुस्कराती हैं माँ
अपने प्रेम के बदले
कुछ नहीं मांगती हैं माँ
किन्तु हमारे प्रेम की भी
हक़दार होती हैं माँ

प्रियंका
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
प्रथम वर्ष

!!लक्ष्य!!

बीत गया वह समय
जब रहते थे
हम नि:संकोच
घूम गई हैं नइ सोच
दिन वो ही अच्छे थे
जब डॉट पड़ते ही
रो पड़ते थे
अब ढूढंती हैं
एक कोना
ताकि देखे न कोई
हमारा रोना
चाह हैं
कुछ करने की
सब से हटकर
हर वक्त देखती हैं
नज़रे हमें
कब मिलेगी
सफलता इन्हें
हर पल माता पिता की
आशा भरी निगाह
कभी देती ख़ुशी
तो कभी सहमा देती
हो जाएँ सफल
बस इतना ही
रह गया लक्ष्य

पूजा

बी.ए.(प्रोग्राम)

द्वितीय वर्ष

!!बारिश!!

तेज बारिश के थम जाने पर
निकलते है,
जब राहों पर एहसास
एक नया होता हैं
ऐसे सुहावने मौसम का
शीत पवन के झोंकों का
वह रूह का
स्पर्श पवन का
मज़ा कुछ नया देता हैं
ये पल यूँ
ही कटते रहें
चलते रहें
बस चलते रहें
जो भुला दे
गम ज़िन्दगी के
उस बारिश का एहसास नया है।

आरती

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

द्वितीय वर्ष

!!विद्यालय!!

शुरुआत जिसकी हुई थी
रोने से...
आज खत्म भी हुई है
रोने से....
जहां न जाने की कसम
थी खाई...
अब वहां जाने का मौका
हैं ढूंढ़ते....
हमें क्या पता था कि
वापस लौट कर नहीं
आएंगे वो दिन....
ना जाने कहाँ गए
वो दिन....
जिसकी यादें हैं आज
दिलो-दिमाग में
छूट गया वो विद्यालय....

सोनम

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

प्रथम वर्ष

!!मेरे स्वप्न!!

मैं और मेरे स्वप्न
बचपन से पूरा करने की लगन है,
आगे बढ़ने का साहस
चारों ओर हैं हाहाकार
कौनसी चुनूँ,
सब दिशाएं हैं मैली
जीवन की हैं
यही बड़ी पहेली
तू थोड़ा चल तो ले
तभी तो सीखेगा
इंसान गिरकर ही
तो हैं संभलता
व्यर्थ जीवन है,
जो यह सच नहीं
समझता
तू रख विश्वास,
एक दिन उड़ान भी भरेगा
समाज का क्या है,
यह तो कहता ही रहेगा
अपनी कमजोरियों
को यूं ना दबा
इन्हीं को आगे बढ़ने
का ज़रिया बना
बन ज़िद्दी कि ज़िद हो पूरी तेरी
यूँ ना सोच कि हार होगी तेरी

शीतल

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!काश ये ज़िंदगी एक किताब होती!!

पढ़ सकती मैं आगे क्या होगा**??**
क्या पाऊँगी मैं क्या खो दूंगी**??**
कब थोड़ी ख़ुशी मिलेगी कब दिल रोयेगा**??**
काश ये ज़िंदगी एक किताब होती
काश फाड सकती उन पन्नों को**,**
साथ में उन लम्हों को भी
जिन्होंने मुझे रूलाया है**....**
जोड़ सकती उन लम्हों को
जिन्होंने मुझे हँसाया है**...**
हिसाब तो लगा पाती कितना
खोया और कितना पाया??
काश ये ज़िंदगी
एक किताब होती
वक्त से आँखें चुरा कर
पीछे चली जाती
टूटे सपनो को
फिर से अरमानों से सजाती
कुछ पल के लिये
मैं भी मुस्कराती
काश ये ज़िन्दगी एक किताब होती!!

अंशुल

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

द्‌वितीय वर्ष

!!ज़िन्दगी!!

ज़िन्दगी यूँ तो हसीन भी है
ज़िन्दगी यूँ तो कठिन भी है
परिश्रम करो तो सफल भी है
ना करो तो विफल भी है

रुख़सार

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!मन की बात!!

मन की बात कहने को दिल करता है
अपनी बात बताने को दिल करता है
जीवन में कोई ऐसा चाहिए
जिसे हर बात बताने को मन करता है
यूँ तो जीवन के हर मोड़ पर
कोई न कोई मिलता है
पर जीवन में कोई खास चाहिए
जिसे हर बात बताने को मन करता है
खुशी हो या दुख, हँसी हो या मज़ाक
बिना डरे सब कहने को मन करता है
जीवन में कोई ऐसा चाहिए जिसे
हर बात बताने को मन करता है
जीवन में हैं ऐसे कुछ लोग जिन्हें
दिल की हर बात बताने को मन करता है
कह तो दे उन्हें दिल की बात पर फिर
दिल को उन्हें खोने के
ख्याल से डर लगता है
उस डर से ही मुझे बहुत डर लगता है
मिला हैं जीवन में अब कोई, जिसे
मन की सारी बात कहती हूँ
समझता है जो बहुत अच्छे से मुझे
और मेरे दिल की हर बात को
शायद इसलिए उसे खोने के डर को ही भूल
बैठी हूँ जीवन में मिल ही गया वो,
जिसे मन की बात कह देती हूँ

करिश्मा

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!ज़िन्दगी का गणित!!

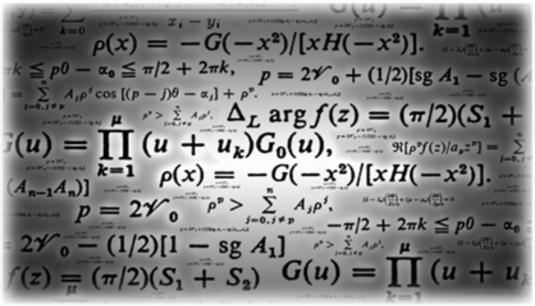

मानवता को न भूलो,
इंसानियत को न छोड़ो,
अपने स्वार्थ के लिए,
अन्य को मत मोड़ो-तोड़ो,
सिर्फ कागजों पर न तौलो,
उन गरीब,मजदूर और
असहाय, बेघर लोगों को,
संख्याओं और प्रतिशत से न देखो,
उनकी गरीबी और बेबसी को,
वो गणित...,
तुम तक ही सीमित रहती हैं,
और दफ्तरों में ही बटती रहती हैं,
एक बार तो देखों
यथार्थ की नजरों से,
मानवता और इंसानियत की नजरों से,
उनकी आर्थिक स्थिति को,
देखना उनकी आँखों में,
उनकी बेबसी को, पढ़ना उनके चेहरों पर,
उनकी गरीबी का फिर पता चलेगा,
ज़िन्दगी का गणित समझ आ जायेगा....

ममता कुमारी

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

तृतीय वर्ष

!!मोहब्बत!!

लहरों से ज़्यादा बहाव था,
तेरे हर शब्द में
मैं इशारा नहीं कर सकती,
तेरी बात कैसे करती
वो रात ही ऐसी थी
जिसने मेरी रूह बाँट दी
मुझे मुझपर ऐतबार नहीं,
पर मेरे प्यार पर है
बस चलती जाऊं,
चलती ही जाऊं
मंज़िल मिलेगी ज़रूर,
भटक कर ही सही
अब ख़्वाब देखूँ
भी तो क्या देखूँ
हर ख्वाब में दर्द है,
दर्द में दिल
कोई क्या जाने
इस दर्द को,
जो खुदा ने
बस मुझे बख्शा है
हमें क्या पता था
मोहब्बत चीज़ क्या है
तेरा दीदार हुआ तो पाया,
किसी के लिए
खुद को खो देना ही मोहब्बत है।

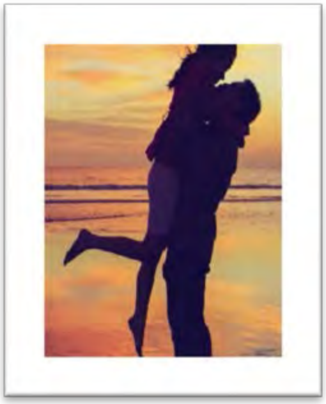

मोना

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!मन की स्थिति!!

जीवन के सच को समझती
मैं आज भी वही हूँ, जहां थी
माता-पिता के दुख को समझती हूँ
हार की स्थिति का
स्मरण हैं मुझे
परन्तु काँटों पर
चलकर ही मंज़िल मिलेगी
यही सुनकर बड़ी हुई हूँ
दादी की कहानियां
सुनकर बड़ी हुई हूँ
जीवन के सच को समझती हूँ
आज जब कुछ
फैसले लेने लगी हूँ
उन फ़ैसलों से डगमगा न जाऊं
फूल की तरह खिल कर आऊं
और जीवन को समझती रहूँ
यही कामना करती हूँ
जीवन के सच को समझती हूँ।

छवि

बी.ए.(प्रोग्राम)

द्वितीय वर्ष

!!मंजिल आसान नहीं!!

बच्चों को जन्म देना आसान नहीं
रूबरू करना आसान नहीं
उसे संसार से
उसे चलना सिखाना आसान नहीं
जब वे बोले तो
मां बुलवाना आसान नहीं
मंजिल उसकी कठिन है
पर मंजिल की कठिनाई से
हार मानना आसान नहीं।
करती हर प्रयास वो तो
आगे बढ़ाने का अपने बच्चे को,
सही राह दिखाने का,
मंजिल पर चलाना बच्चे को
मां के लिए आसान नहीं।
अब जब बड़ा हुआ है वह
तो उसे कुछ समझाना
मां के लिए आसान नहीं।
करता है वह अपने मन की,
नहीं जानता कि क्या-क्या किया है
मां ने पालने को उसे
नहीं था आसान
बनाना उसका भविष्य
रास्ता था कठिन
मंजिल की कठिनाई मापना
बच्चे के लिए आसान नहीं।
जो सहा दर्द बच्चे के लिए
उसे समझना इतना आसान नहीं।

वंदना मिश्रा
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
प्रथम वर्ष

!!काश!!

काश!
भगवान फिर लौटा दे
वो पल,
जब मैं अपने घर का
आंगन
भरा पूरा देखा करती थी
लौटा दे आंगन में वो खुशियां
जिसमें मैं भी कभी
खेला करती थी
पिता की राजकुमारी बनकर।
जिसमें मैं भी कभी
अपने पिता से जिद्द किया करती थी।
जब मैं अपने भाई को भी हँसते देखती थी
और पिता के साथ मस्ती करते देखती थी।
काश! भगवान लौटा दे वो पल
जब अपनी माँ को संवरते देखती थी
मां को कभी कभी संवारती भी थी।
अब माँ के चेहरे पर ना खुशियां देखती हूं
ना वो लालिमा
आज यह आंगन सूना हो गया
खुशियों का आना भी बंद हो गया
गैरों से तो क्या ही कहना?
अपने भी आज अनजान हो गए
काश!! भगवान लौटा दे वो पल
जब फिर से यह आंगन भरा पूरा हो जाए।

आरुषि शर्मा
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!वक़्त ने सिखाया है!!

पास रहने पर अहसास नहीं होता
पर दूर जाने से याद आती है
यह मुझे वक़्त ने सिखाया है।
दूसरों के साथ चलना कठिन तो है

आसान होता है
पर अकेले चलना नामुमकिन नहीं
यह मुझे वक़्त ने सिखाया है।
लोगों के साथ से
ज़िन्दगी खूबसूरत होती है
लेकिन उनकी यादों के सहारे
जीना मुश्किल नहीं
यह मुझे वक़्त ने सिखाया है।
रोने के सौ बहाने हैं ज़िन्दगी में
लेकिन हँस कर गमों को भुलाना
यह मुझे वक़्त ने सिखाया है।

प्रीति शर्मा
बी.ए.(प्रोग्राम)
तृतीय वर्ष

!!प्रदूषित दिल्ली!!

बढ़ रहा प्रदूषण दिल्ली में,
न साँस आए,
न जिया जाए!
सब हो गए हैं गाड़ी वाले,
कोई बस की तरफ नज़र न डाले!
हम चाहते हैं साफ-सफाई,
नहीं करते हैं साफ-सफाई
इसलिए प्रदूषण ने
हाहाकार मचाई!
मानव द्वारा हुआ प्रदूषण
जीव-जंतु भी झेलते हैं,
संकट में है सबका जीवन
बुरा हाल है दिल्ली का,
कहीं जाने से डरते है ||

नज़मा
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!क्या लिखूं!!

"क्या लिखूँ"
चौथे सेमेस्टर का
पहला दिन था मैम के साथ
न जाने कुछ हुआ
जो कह दी दिल की बात
फिर आया मैम को ख्याल
कि उठाओ कॉपी, पैन
और लिख दो दिल की बात।
जिससे बच्चे हुए परेशान
फिर समझी मैम ने बात
और कहा लिखो कोई भी बात
तो अचानक आया एक सवाल
लिखूँ तो "क्या लिखूँ"।
समझ न कुछ मेरे आया
जब मैंने सर घुमाया।
सब लिख रहे थे अपना- अपना
जिसमे था परेशानी का बचपना।
कुछ बच्चे थे लिखने में मगन
जैसे हवा में लहरती पतंग ।
पर मैं थी, अभी तक वही सोचने
लिखूँ तो "क्या लिखूँ"।
जो पढ़कर अच्छा लगे ।
न कुछ था दिमाग में।
दिमाग में घूम रही थी
बस एक ही बात
कि लिखूँ तो "क्या "लिखूँ"।

करुणा

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

द्‌वितीय वर्ष

!!कुछ समझ नहीं आ रहा!!

ज़िदगी यूहीं कटती
जा रही है,
कुछ समझ नहीं आ
रहा,
क्या करना हैं जीवन
में,
कुछ समझ नहीं आ रहा
समय जाता जा रहा है
उम्र यूहीं घटती जा रही है
इस समय का सदुपयोग किस तरह करुँ,
कुछ समझ नहीं आ रहा
जीवन में
ऐसे बहुत से लोग मिले,
जिनसे बहुत कुछ
सीखने को मिला
मगर उन लोगों का
शुक्रिया कैसे करुँ,
कुछ समझ नहीं आ रहा।

नेहा बिस्वास

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

द्‌वितीय वर्ष

!!ज़िंदगी की अनोखी तस्वीर!!

जन्म लेती वह,
रोती- खेलती बड़ी होती ,
उंगलियां पकड़ कर चलना सीखती
गिरती उठती साइकिल चलाती
पढती है,
बड़े बड़े सपने देखती
कोशिश करती सपने सच करने को
लगातार कोशिश करती,
एक दिन बड़े होकर
सपने सच कर लेती
नौकरी चाकरी कर,
घूमती फिरती वह,
एक दिन फिर
वह छोटा बच्चा बन जाती
बच्चो की तरह ज़िद करती
अंगुलियां पकड़ अपने बच्चों की
चलना सीखती वह बूढ़ी
फिर बच्चा बन जाती
ज़िंदगी की सैर कर फिर चली जाती

अंशुल
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
द्वितीय वर्ष

!!मैं उड़ना चाहती हूँ!!

मैं उड़ना चाहती हूँ,
कुछ बनना चाहती हूं
दुनिया की इस भीड़ से निकल,
आगे आना चाहती हूँ
अपनी एक पहचान बनाना चाहती हूँ
मैं उड़ना चाहती हूँ,
कुछ बनना चाहती हूं
कुछ कर दिखाना चाहती हूँ
ज़िन्दगी में एक मुकाम
हासिल करना चाहती हूँ
मैं उड़ना चाहती हूँ,
कुछ बनना चाहती हूं
कुछ कर दिखाना चाहती हूँ
पापा को गर्व महसूस कराना चाहती हूँ
एक मिसाल बनना चाहती हूँ
मैं उड़ना चाहती हूँ,
कुछ बनना चाहती हूं
कुछ कर दिखाना चाहती हूँ
मेहनत कर कामयाबी
पाना चाहती हूँ
ज़िन्दगी को एक
सकारात्मक नज़रिए से जीना चाहती हूँ
मैं उड़ना चाहती हूँ, कुछ बनना चाहती हूँ,
कुछ करना चाहती हूँ, कुछ पाना चाहती हूँ
अपनी पहचान बनाना चाहती हूँ।

शबनम अहिरवार
बी.ए.(प्रोग्राम)
द्वितीय वर्ष

!!माँ का प्यार!!

माँ की ममता सबसे न्यारी
माँ की ममता सबसे प्यारी
माँ का आँचल सबसे सलोना
हर दुख से हमें बचाती
हमारी चिंता करती रहती माँ
सबसे प्यारी होती माँ
चोट कभी ना लगने देती
हर पीड़ा से हमें बचाती
सबसे अद्भुत रूप हैं ऐसा
ईश्वर की लीला के जैसा
कहीं ना मिले सुकून
बस माँ की गोद ही जन्नत
माँ का प्यार सबसे अनोखा
माँ का आँचल सबसे सलोना
माँ की ममता न्यारी
माँ भगवान का ही अवतार
कदमों में बसा स्वर्ग अपार
माँ बिना हैं जीवन अधूरा
हमारी खुशी में खुश हो जाती
हमारे दुख में
हमसे अधिक घबराती
सबसे प्यारी माँ की ममता
सबसे न्यारी माँ की ममता।

शीतल

बी.ए.(प्रोग्राम)

द्वितीय वर्ष

!!यादें!!

आज तुम मेरे साथ नहीं
बस हैं तुम्हारी यादें
पास तुम मेरे नहीं,
बस हैं तुम्हारे वादे।
तेरी लौटने की
आस में ना जाने
यूँ ही कितनी कटी हैं रातें
जीने का सहारा बन गई है
वो गुज़रे दिन की बातें।
अब सब्र भी हैं टूट रहा
मैं हिम्मत भी हारी
तुम आकर मुझको थाम लो
करो लौटने की तैयारी।

प्रीति शर्मा

बी.ए.(प्रोग्राम)

तृतीय वर्ष

!!ऐसी रात!!

ये हसीन रात,
ये चाँद तारे,
साथ जीने के ये कसमें वादे
आज अकेला देख
बहुत मज़ाक बनाते हैं
जो तारे गवाह थे
तेरे मेरे किस्से के,
अब सब मुकर जाते हैं
चाँद भी हर रात बस
एक ही बात दोहराता है-
बड़ा घमंड था खुद पर,
कहती थी मुझसे भी प्यारा शख्स है?
कहाँ हैं वो शख्स,
आज अकेला कर गया?
तेरा वो चाँद
तेरी हर रात अंधेरी कर गया?
रोज़ एक ही बात सुन
वो चाँद भी मायूस हो जाता है-
दूर नहीं गया वो,
यहीं आस पास हैं कहीं
मजबूरी हैं उसकी,
धोखे की फितरत नहीं
रात अंधेरी है,
काले बादल छाये हैं हर कहीं
छंटने दे इन्हें,
तब रात मेरी भी होगी हसीं

सोनाली डबास
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!कलयुग आ गया है!!

कलयुग आ गया हैं
यह दुनिया पर छा गया है
पैसे और ज़मीन के लिए
भाई, भाई को मार रहा है।
यह कैसी हैं महामारी,
धर्म के नाम पर दूसरे धर्म को
नीचा दिखाया जा रहा है।
कलयुग आ गया हैं
युवा फ़ोन में गुम है
खुद अपनी स्थिति को खराब कर रहा है
फ़ोन के रिश्तों के लिए,
खून के रिश्ते पीछे छोड़ रहा है।
बच्चे विदेश में कमाने जा रहे हैं
बूढ़े माँ-बाप
घर में अकेले रो रहे हैं
उनकी स्थिति खराब हो रही है।
यह कैसी हैं महामारी,
जहाँ लड़की को लक्ष्मी माना जाता है
वहीं उनकी इज़्ज़त से
खिलवाड़ किया जा रहा है।
देखो कलयुग आ गया है
यह कैसी राजनीति?
जहाँ भ्रष्टाचार सर उठा रहा है
लोगों की आशाओं को मारा जा रहा है
कलयुग आ गया है

रितु तंवर
बी.ए.(प्रोग्राम)
द्वितीय वर्ष

!!कुछ, जो है अनकहा!!

जो हैं अनकहा,
उसे राज़ रहने दो
है अपने दरम्यान जो,
उसे खास रहने दो
नहीं कहना हैं अब कुछ,
बंद अब ये ज़बान रहने दो
दिल में अहसासों का,
ना ज़िंदा नामोनिशाँ रहने दो
ये दिल तोड़ने का खेल बेमिसाल है,
प्यार इसका नाम रहने दो
ये झूठी बातें हर कसमें वादे,
झूठा सब ये व्यापार रहने दो
झूठी फ़िक्र, हाल चाल, प्यार,
झूठे सब ख़्याल रहने दो
इस दर्द में ही अब सुरूर है,
इसे अब बरकरार रहने दो
हज़ारों ख्वाबों की कब्र दफ़न है,
दिल ये कब्रिस्तान रहने दो
ना दस्तक हो अब किसी की,
ज़िन्दगी ये बियाबान रहने दो।
याद आ जाये कभी तो,
दिल को मत कहना आज रहने दो
लौट आने का दिल हो,
तो दिमाग से कह देना आज रहने दो
इन हसीन ख़्वाबों में,
हमें डूबा आज रहने दो
मुड़कर आना चाहो तो फिर आ जाना,
खुले ये दिल के द्वार रहने दो
जो फिर यही कहानी दोहरानी हो,
तो दूरी अब बरकरार रहने दो
जीते जी मार तो चुके हो,
दुनिया को दिखाने के लिए
तो खड़ा आज रहने दो,
जहां हैं हम हमें वहीं, आज रहने दो,
जो हैं हम हमें वही, आज रहने दो।

सोनाली डबास
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!सच हैं जनाब!!

खोलती हूँ मैं जब भी
किताबों के पन्नों को
पढ़ते-पढ़ते उन्हें
न जाने क्या होता हैं मुझे,
किताबों के पन्नों को छोड़
बाहरी दुनिया को
देखने लगती हूँ
गलियों और चौराहों पर
ठंड में कपकपाते,
वृद्धों और बच्चे को
कर रही हैं सरकार काम
उनके पक्ष में,
दी गई हैं सुविधाएँ
उन्हें भी परन्तु ये
सब महज कागज़ो में हैं सिमटे
कड़वा हैं जनाब पर सच है!!

ममता कुमारी
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!मुस्कान!!

आज फिर दिखी
उसकी मुस्कान,
मगर उसकी मुस्कान
उसकी न थी
उसे देखा था
मैंने मुस्कुराते हुए,
नि:श्छल थी उसकी हंसी,
सपनों से भरी
सोचा नहीं था ज़िंदगी
यूं पलटेगी उसकी,
कब टूटे सपने उसके आँखों के
खबर न हुई उसे भी,
लेकिन ज़िंदा हैं
वो आज भी
किसी की आस में,
मगर वो ही जानती हैं
कैसे जी रही हैं वो
इस नर्क समान एहसास में
बेशक नहीं भूली
मुस्कुराना वो
आज भी देखती हूँ
उसे खिलखिलाते हुए
फिर फर्क ही क्या पड़ता हैं अगर ...
उसके आँखों की चमक गायब हैं तो
अगर गालों की लाली गायब हैं तो
अगर वो नाटक ही कर रही हैं
सिर्फ खुश रहने का तो
लोगों को तो मतलब हैं
उसके खुश रहने से
...तो खुश हैं वो
फिर भले ही बुझ गयी हो अंदर से
उसे फ़िक्र हैं ज़माने की,
काश ज़माना भी उसकी फ़िक्र करता
राह बदलती नहीं उसकी,
किस्मत पलटती नहीं उसकी
मगर कुछ तो काँटो से बचती वो
ज़माना तो दूर, साथ तो अपनों ने भी न
दिया,
उन्होंने भी बस साथ रहने का नाटक ही
किया
किस-किस से लड़े वो,
सोच कर ये,
मान ही ली हार उसने,
कड़ी मेहनत से लायी
फिर ये मुस्कान वो...
आह!!!
उसकी ये मुस्कान
दर्द समेटे हुए है
विद्रोह लिए हुए हैं
चिंगारी समान
मुझसे फिर न देखी जायेगी
उसकी ये मुस्कान!!!

मनीषा
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!नारी तुम विश्वास जगत का!

नारी तुम विश्वास जगत का,
तुम्हें अपना रूप धरना होगा,
तुम नाशनी
कलयुग के रावण की,
तुम्हें चण्डी रूप धरना होगा,
तुम्हें हर सपने को,
बढ़-बढ़ कर पूरा करना होगा,
राह के कांटों से
स्नेह करना होगा,
तुम्हें केवल
वस्तु नहीं बनना होगा,
नारी तुम संघर्ष जगत का,
मरती मानवता को तुम्हे,
संसार में लाना होगा,
नारी तुम विश्वास जगत का,
तुम्हें विजय गाथा को गाना होगा,
मन से शब्द देना होगा
मन के भावों को
तुम्हें फिर इतिहास को
वर्तमान में रचना होगा!!

ममता कुमारी

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

तृतीय वर्ष

!!याद!!

याद,
इस कदर आती हैं उनकी
वक्त भी गुजरने का नाम नहीं लेता
ये वक्त थम -सा जाता हैं उस पल
जिस पल उनकी याद आती हैं ।
याद ,
इस कदर आती हैं उनकी
उनसे मिलने का मन करता हैं
उनकी साथ में रहने का मन करता हैं
पर ऐसा कभी नहीं हो पाता
उनकी याद बस
याद बन कर रह जाती हैं ।

याद,
इस कदर आती हैं उनकी
बात करने का मन करता हैं
पर शायद उनके पास
हमारे लिए वक्त नहीं
वो अपनी दुनिया में मस्त हैं
और हम उनकी याद में तड़प रहे हैं
याद में तड़प रहे हैं ....

लेखिका

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

तृतीय वर्ष

!!क्या लिखूँ!!

आज मेरे हाथ रुके से हैं
लिखना चाहती हूँ
पर क्या लिखूँ
सोच रही हूँ
कुछ पिता के लिए लिखूँ
जिसने पलकों पर बैठाए रखा
या उस माँ के लिए लिखूँ
जिसने मेरी अनकही
बातों को भी सुना
माँ हमारे लिए खाना बनाती है,
तो उस खाने का प्रबंध करते है -"पिता"
माँ रो लेती हैं दुख में भी,
तो खुद को मजबूत
बनाया रखते हैं पिता
पहला साक्षात्कार माँ-बाप से
बाद में इस संसार से होता हैं
हम और हमारा जीवन
बस उन्हीं से ही होता है

नूतन
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
द्वितीय वर्ष

!!एक दर्द ऐसा भी!!

एक दर्द ऐसा भी
क्या बिगाड़ा है,
कभी जिस्म से
खेलते हो,
कभी जज्बातों से
खेलते हो,
कभी कठपुतली समझते हो,
कभी वस्तु समझते हो,
विश्वास करती हूँ तुम पर
पर तुम क्यों आँखों से
इतने अंगारे दहकाते हो,
तुम सब एक ही जैसे दिखते हो,
तरीके अलग-अलग अपनाते हो,
कभी दिल को छलनी करते हो,
कभी शरीर को तोड़ते हो,
जो मन करे, वही बोलते हो,
पल-पल में बदलते हो,
घिन आती है मुझे
तुम जैसे को देख,
बहुत ऊँचा-ऊँचा बोलते हो,
सब में छुपाए होते हो
अपना ही स्वार्थ, तुम क्या समझोगे
उस कसक को, जो उठती है मन में
बार-बार ज्वार बन के!

ममता कुमारी
बी.ए. हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

!!सपने!!

मेरी हां में, आप की ना है
मेरी चुप्पी
आप की खुशी
कैसी है ये खुशी
सब खुश हैं
पर मेरे सपने?
गिरती हूँ तो
क्यूँ धमकाते
सबक सामने, मूर्ख ठहराते
क्यूँ न हाथ पकड
चलना सिखाते
मेरी चुप्पी में हैं
कैद प्रश्न अनेक
पर देखती हूँ
कान ही हैं आप के बंद
एक इमारत
उसका एक कमरा
उसके कोने में दुबका
मेरा छोड़ -सा सपना
पर क्या करुं
आप के इंकार का
कोशिश करुंगी
खुश रह लूं
क्योंकि मेरे लिये
आप की खुशी है, मेरी खुशी

गुंजन तिवारी
हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

!!कैसा ये मेहमान!!

हुई एक दस्तक
आया एक मेहमान
आकर उसने कब्जा किया
हमारे मन-मस्तिष्क पर
काम भी हुआ आसान
सोचो
ऐसा कौन सा है मेहमान
सैलफोन है इस का नाम
गजब इसका प्रभाव है
इसके बिना जीवन
लगता बेकार है
घेरा इसने सब ओर है
फेसबुक
ट्विटर
व्हाट्सएप
का सब ओर शोर है
अनजानों को अपना बनाया
पर अपनों से दूर भगाया
प्रभाव इस का गहरा है
खतरा भी गहरा है
पर खतरा कहाँ नहीं होता है
आखिरकार
दिमाग से काम ना लेने वाला
ही तो अंत में रोता है

मिताली रावत
हिन्दी विशेष
द्वितीय वर्ष

!!पिता!!

"पिता" क्या है? क्या यह मात्र एक शब्द है? जिसका अर्थ मात्र एक संबंध विशेष से है? नहीं इसका अर्थ कहीं विस्तृत है। इस स्वार्थी दुनिया में त्याग की एक मूर्ति हैं पिता। पिता वह हैं जो बचपन में हाथ थामकर चलना सिखाता है, फिर अपने पेरो पर खड़े होना और विपरीत परिस्थितियों में डटकर रहना सिखता है। हमारे सुख- दुख में साथ खडा रहते है। हमे मजबूत बनता है। स्वयं के बारे में न सोच जो सभी के बारे में सोचते हैं ज़िमेदारियो के बोझ तले दबकर भी जो हमारे लिए मुस्कराता है। पिता सूरज की तरह होता हैं गर्म ज़रुर होता हैं पर उजाला भी उन्हीं से होता है। पिता वह हैं जो रोज खुद धूप में तपकर हमारे लिए छाँव की तलाश में रहता है।

शिष्ठा

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

तृतीय वर्ष

!!पुस्तकालय!!

क्या होता हैं पुस्तकालय? पुस्तकालय ज्ञान अर्जित करने का साधन होता हैं इससे हमें तरह तरह के विषय पर जानकारी मिलती हैं जैसे-साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास, राजनीति इत्यादि। यहां पर प्रसिद्ध लेखक, कवि, क्ववयित्रियों की कृतियाँ भी सरलता से प्राप्त हो जाती हैं। पुस्तकालय केवल ज्ञान अर्जित करने का ही साधन नहीं हैं बल्कि यह अकेलेपन का साथी भी है। यदि कोई व्यक्ति अकेला हैं तो वह पुस्तकालय में अपना समय व्यतीत कर सकता है। पुस्तकालय किसी भी विद्यार्थी का सच्चा मित्र होता है। यही आगे बढ़ने में विद्यार्थी का सहायक होता हैं क्योंकि इसी के कारण विद्यार्थी ज्ञान अर्जित कर भविष्य में कुछ कर पाता है। अतः यह कहा जा सकता हैं कि मनुष्य के जीवन में पुस्तकालय महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

वन्दना

बी.ए.(विशेष) हिन्दी

प्रथम वर्ष

!!रियलिटी शो का समाज पर प्रभाव!

टीवी मनोरंजन का एक माध्यम है। अगर इस माध्यम से कुछ शिक्षा मिलती हैं तो इससे समाज को एक नई दिशा मिलती है। लेकिन आजकल दिखाए जाने वाले रियलिटी शो का नकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। आजकल कोई भी ऐसा टीवी चैनल नहीं हैं जिसमें रियलिटी शो न आता हो। एक समय था जब टेलीविजन पर मनोरंजन के लिए समाचार, पुरानी फिल्मों गाने, कॉमेडी शो और सप्ताह में एक फिल्म दिखाई जाती थी और रात को १० बजे टीवी के कार्यक्रम बंद हो जाते थे | परंतु आजकल चौबीसों घंटे कार्यक्रम चलते रहते हैं। मुद्दा यह हैं कि, रियालिटी शो में क्या सब कुछ वास्तविक होता है? अध्ययन से यह पता चला हैं कि रियलिटी शो में दिखाई जाने वाली कहानियाँ और विषयवस्तु से आज के युवाओं के दिल और दिमाग पर गहरा असर पड़ रहा हैं | कई युवा लोग इस काल्पनिक दुनिया को वास्तविक और हकीकत समझ रहे हैं। लेकिन वास्तविकता कुछ अलग ही है। असल जीवन में रियलिटी शो के कलाकारों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और परिणामस्वरूप वह कुंठित हो जाते हैं। बच्चों की बात करें तो जैसे उनका बचपन ही छीन लिया गया हो। रातों रात अमीर बनने की ललक के चलते बच्चे असफल माँ-बाप की सफलता की सीढ़ी बन रहे हैं | रियलिटी शो में भाग लेने के बाद, निकाले हुए बच्चों पर असफलता का तमगा लगा दिया जाता है, जिस बोझ के साथ उन्हें सारी उम्र जीवन व्यतीत करना पड़ता है। शिशु रोग विशेषज्ञों के अनुसार शूटिंग के दौरान तेज रोशनी का सामना करना पड़ता हैं जो बच्चों के शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। तेज़ रोशनी से आंखों पर नकारात्मक असर पड़ता है। इसलिए रियालिटी शो के असलियत को पहचानें और सोचें कि रियलिटी शो की दुष्प्रभाव को कैसे रोका जाएं। एक समय गानों का कार्यक्रम प्रसारित होता था, उस समय शायद ही किसी ने यह कल्पना की होगी कि बदलते समय के साथ-साथ मनोरंजन के क्षेत्र में इस हद तक विस्तार हो जाएगा कि आपके लिए यह निर्णय लेना भी मुश्किल हो जाएगा कि आप कौन सा प्रोग्राम देखना चाहते हैं। टेलीविजन चैनलों में विस्तार होने के साथ प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की विषयवस्तु में भी कई तरह के प्रयोग किए गए। सूचना प्रधान कार्यक्रमों से लेकर सास-बहू सीरियल तक लगभग सभी विषयों को कार्यक्रमों का रूप देकर प्रसारित किया जा चुका है। प्राय: देखा गया हैं कि टेलीविजन पर आने वाले कार्यक्रमों का व्यक्ति के मस्तिष्क पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता हैं कि वह स्वयं को सीरियल के पात्र के साथ

जोड़कर देखने लगता है। विशेषकर महिलाएं तो संवेदनशील दृश्यों में रोना तक शुरू कर देती है। सीरियल की नायिका की तरह कपड़े पहना और सजना-संवरना भी उन्हें बहुत पसंद होता है। वैसे तो अधिकांश टी.वी. सीरियल महिलाओं को केन्द्र में रखकर ही बनाए जाते

हैं लेकिन वर्तमान समय में युवाओं को आकर्षित करने का काम भी बहुत जोर-शोर से जारी है। युवाओं को अपेक्षाकृत अधिक उत्साही और रोमांचक माना जाता है। उनके उत्साह को भुनाने और अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए टी.वी. चैनलों पर रियलिटी शो जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाने लगा है। यह अपने आप में एक अनोखा प्रयोग है। तथाकथित रियलिटी कार्यक्रमों में विषयवस्तु के अनुसार प्रतिभागियों के निजी जीवन को दर्शकों के समक्ष रख दिया जाता है। लोगों को आकर्षित करने के लिए लड़ाई-झगड़ा, धोखेबाजी आदि इन कार्यक्रमों की सबसे पहली जरूरत होती है। अब यह सब पहले से ही निर्धारित होता हैं या वास्तव में लोगों के जीवन की रियलिटी होती है, यह तो पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता लेकिन एक बात जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते वो यह हैं कि इन कार्यक्रमों का हमारे युवाओं के मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। एक नए अध्ययन के अनुसार रियलिटी शो में दिखाई जाने वाली कहानी और विषय वस्तु युवाओं विशेषकर युवा लड़कियों के व्यक्तित्व और मानसिकता पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है। अमेरिका के गर्ल्स स्काउट्स रिसर्च इंस्टिट्यूट द्वारा किए गए इस सर्वेक्षण में

लगभग 11,000 लड़कियों को शामिल किया गया। इस अध्ययन के नतीजों की मानें तो रियलिटी शो देखने वाली और ना देखने वाली लड़कियों की मानसिकता में बहुत अधिक अंतर होता है। इस संस्थान की मुख्य शोधकर्ता किम्बरली साल्मण्ड का कहना हैं कि युवा लड़कियां रियलिटी शो में दिखाए जाने वाले घटनाक्रम को सही मान लेती हैं और अपने जीवन को उसी दृष्टिकोण से देखने लगती हैं। इस सर्वेक्षण में शामिल लड़कियों में से, जो रियलिटी शो को देखना पसंद करती हैं, उनमें से 78% ने यह स्वीकार किया हैं कि संबंधों के विषय में गपशप करना एक स्वाभाविक बात है। वहीं 64% लड़कियां रियलिटी शो से प्रभावित होकर युवकों को आकर्षित करना और उनके लिए दूसरी लड़कियों से झगड़ा करना तक जरूरी समझने लगती हैं। आमतौर पर रियलिटी कार्यक्रमों में युवाओं को झूठ बोलना और अपनी जिद पूरी करने के लिए अभिभावकों से झगड़ा करना दर्शाया जाता है। इन्हीं सब घटनाओं से प्रभावित होकर किशोरवय लड़कियां यह मानने लगती हैं कि अपनी जरूरतों के हिसाब से झूठ बोला जाना गलत नहीं होता। उल्लेखनीय हैं कि 64% लड़कियां तो यह भी मानती हैं कि रियलिटी शो उन्हें नए-नए विषयों की जानकारी प्रदान

करता है। भले ही यह विदेशी युवतियों की मानसिकता पर आधारित स्टडी हो लेकिन भारतीय परिदृश्य में भी इसके नतीजे जस के तस लागू होते हैं। रियलिटी शो की हकीकत से अनभिज्ञ युवा उसमें दिखाए जाने घटनाक्रम को सही समझते हैं। उसे अपने जीवन के साथ जोड़ना शुरू कर देते हैं। निश्चित रूप से इसके नतीजे उनके लिए घातक सिद्ध होते हैं। कई बार हालात इतने ज्यादा नकारात्मक हो जाते हैं कि उन पर नियंत्रण रख पाना तक मुश्किल हो जाता है। रियलिटी शो में हकीकत का नाम देकर फूहड़ता को प्रदर्शित करना कोई नई बात नहीं हैं लेकिन इसका बच्चों के चरित्र पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। रियलिटी शो में दिखाए जाने वाली कहानियों पर विश्वास करना उनकी मानसिकता को दूषित करने के साथ-साथ परिवार और समाज को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसीलिए बच्चों के लिए रियलिटी शो को मनोरंजन की नजर से ही देखना बेहतर होगा। इसके अलावा अभिभावकों का भी कर्तव्य बन जाता हैं कि वह अपने बच्चों को रियलिटी शो और उससे जुड़ी सच्चाई से अवगत करवाएं. इतना ही नहीं उनके हर बर्ताव पर अपनी नजर रखें और अगर वह कुछ गलत करते हैं या करने की कोशिश करते हैं तो उन्हें समझाएं।

साक्षी पांडेय

बी.ए. (विशेष) हिंदी

तृतीय वर्ष

!!माँ!!

इस दुनिया में सबसे अच्छा पवित्र निस्वार्थ रिश्ता माँ का होता है। "माँ "शब्द में इतना साहस होता हैं कि बच्चे के मन में माँ का नाम आने से एक अजीब सी मुस्कुराहट और सुकून का भाव आता है। माँ वो होती हैं जो अपने सपने भी अपने बच्चों की आंखों में ही देखती है। वह खुद भूखी सो सकती हैं किंतु अपने बच्चों को भूखा नहीं सोने देती है। “माँ” एक ऐसा शब्द हैं जिसके बारे में शब्दों से बयां तो किया ही नहीं जा सकता क्योंकि शब्द तो कम पड़ सकते हैं पर माँ का प्यार कम नहीं पड़ सकता। बच्चे तो माँ को भूल सकते हैं पर माँ बच्चों को नहीं, क्योंकि माँ बच्चों की खुशियों के लिए सब त्याग सकती हैं और अपने त्याग के बदले में बच्चों से सिर्फ उनका बेहतर भविष्य मांगती है। इसलिए कहते हैं कि इस दुनिया में भगवान नें सबसे खूबसूरत कृति या रचना माँ को बनया है। इसलिए मुझे माँ का नाम सुनते ही एक शायर की शायरी के कुछ अंश याद आते हैं -

"किसी के किसी के हिस्से में घर आया
तो किसी के हिस्से में दुआ आई
मैं घर में सबसे छोटा थी
इसलिए मेरे हिस्से में 'माँ' आई"

शुभ्रा त्रिवेदी
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
प्रथम वर्ष

!!कुछ रंग प्यार के ऐसे भी!!

नीलू आज अपनी पढ़ाई खत्म करके अपने गाँव को लौट रही थी। उसके पिताजी गाँव के पुजारी थे, जो गाँव में पूजा-पाठ और शादी-ब्याह करवाया करते थे। नीलू अपने पिता की इकलौती संतान थी। वह अपने पिता से बहूत प्रेम करती थी और उसके पिता भी उसे किसी राजकुमारी से कम न मानते थे। लेकिन माँ के जाने के बाद उसे घर में बहूत अकेलापन सा लगता था। पिताजी तो ज्यादातर काम में ही व्यस्त रहा करते थे। यही कारण हैं कि अधिकतर समय वह अपनी मौसी के साथ ही रहती थी । इसीलिये गाँव पहूँचने के दो दिन बाद ही पिताजी से इजाजत ले कर वह अपनी मौसी के यहां रहने चली गयी। मौसी का घर भी कुछ ज्यादा दूर नहीं था। सुबह घर से निकलो तो शाम तक पहूँच जाते थे और नीलू वहाँ कई बार जा चुकी थी इसीलिये उसे वहाँ के रास्ते भी अच्छे से याद हो गए थे । आख़िरकार शाम तक वह मौसी के घर पहूँच ही गयी। वहाँ पहुँच कर उसने मौसी जी के पाँव छुए और सामान को कमरे में रख कर हाथ मुँह धोने चली गयी। फ़िर बैठ कर उसने मौसी से बहूत सी बातें की। बाते करते-करते ही न जाने कब उसे नींद आ गयी। मौसी जी को पूजा पाठ का बहूत शौक था, इसीलिए जब सुबह नीलू की आँख खुली तो उसने देखा कि मौसी जी मंदिर जाने को तैयार थीं। नीलू को पूजा-पाठ में ज़रा सी रूचि नहीं थी लेकिन मौसी के जोर लगाने पर वह उनके साथ जाने को तैयार हो गयी थी।

पीले कपड़ों में वह खिले हूए पीले गुलाब सी लग रही थी, जो मानो अभी-अभी ओस की बूंदों से नहायी हूई हो। मौसी ने उसे काजल का काला टीका भी लगा दिया ताकि उसे कहीं नजर न लग जाए और फिर वो दोनों मंदिर की ओर रवाना हो गए। मंदिर पहूँच कर उसने मौसी से कहा आप जाइए पूजा करने, मैं सीढ़ियों पर बैठ कर आपका इंतजार करूंगी।

मौसी पूजा करने चली गयीं। नीलू सीढ़ियों पर बैठकर उनका इंतजार ही कर रही थी कि अचानक हवा चली और उसका दुपट्टा उड़ गया। नीलू ने दुपट्टे को पकड़ने की बहुत कोशिश की, पर न पकड़ पायी। तभी उसने देखा कि उसका दुपट्टा एक लड़के के पास है, जिसका नाम सुरेश था। नीलू सुरेश से अपना दुपट्टा लेने पहुँची कि तभी अचानक से उन दोनों की नजरें एक-दूसरे से मिली जैसे वह एक ही मुलाकात में एक-दूसरे को जान लेना चाहते हों। तभी मंदिर की घंटी बजी और नीलू ने अपना दुपट्टा सुरेश के हाथ से छीन लिया और वहाँ से चली गयी। तभी मौसी वहाँ आई और नीलू उनके साथ घर चली गयी। पर रास्ते भर वह सुरेश के बारे में ही सोचती रही। उसके मन में न जाने कितनी प्रसन्नता और उत्सुकता थी। सुरेश से मिलने की प्रसन्नता और इस बात की उत्सुकता कि क्या वह उस से दोबारा मिल पाएगी, क्या वह कल भी मंदिर आएगा?? इधर सुरेश की हालात भी कुछ ऐसी ही थी। दोनों को रात भर जैसे नींद ही नहीं आ रही थी। सुबह जब मौसी उठी तो उन्होंने देखा कि आज नीलू उनसे पहले ही उठ चुकी थी और मंदिर जाने को तैयार थी। मौसी को बड़ा आश्चर्य हूआ कि इसे क्या हूआ कल तक जो लड़की मेरे जोर लगाने पर भी मंदिर जाने को तैयार न थी, वह आज इतनी जल्दी कैसे उठ गयी। खैर मौसी ने सोचा, जो भी हो अच्छी बात हैं और मौसी भी तैयार हो गयीं। वे दोनों मंदिर पहुँच गए। इस बार भी नीलू ने मौसी से कहा कि आप जाइए, पूजा कर आईये मैं आपका यहीं इंतजार करूँगी। मौसी के जाने के बाद नीलू ने इधर-उधर देखा, लेकिन उसे सुरेश कहीं नजर नहीं आया। उसका मन थोड़ा उदास हो गया। वह सीढ़ियों से उठ कर मंदिर के अन्दर जाने लगी कि तभी अचानक उसका पाँव फिसल गया। वह गिरने ही वाली थी कि किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया और गिरने से बचा लिया। जैसे ही वह पीछे मुड़ी तो उसने देखा कि जिसने उसे गिरने से बचाया था वह और कोई नहीं सुरेश ही था। सुरेश को देखते ही उसका उदास और मुरझाया हूआ चेहरा जैसे खिल सा गया। उसका मन हूआ कि वह उसे अपने गले से लगा ले और पूछे कि आज इतनी देर कैसे कर दी आने में? पता है, मैं कितनी देर से यहां तुम्हारा इंतजार कर रही थी। लेकिन उसने ऐसा कुछ भी न कहा और दोनों बस एक दूसरे को देखते ही रहे, जैसे आँखों-आँखों में ही सारी बातें एक दूसरे को समझा देना चाहते हों। थोड़ी देर में नीलू को होश आया और वह उस से दूर खड़ी हो गयी। फिर उसे धन्यवाद बोल कर वहां से चली गई। लेकिन उसकी नजरें बार-बार पीछे मुड़कर सुरेश को देखी जा रही थी। तभी मौसी पूजा करके लौटी और नीलू उनके साथ घर चली गयी। इसी तरह मिलने और मिलाने का यह क्रम लगाता यूँही चलता रहा। लेकिन इस बार सुरेश ने यह निश्चय कर लिया था कि वह नीलू को अपने दिल की बात बता कर ही रहेगा। उधर नीलू ने भी सोच लिया था कि वह भी सुरेश को बता देगी कि वह उससे बहुत प्रेम करती है। रोज की तरह आज भी नीलू मंदिर में सुरेश का इंतजार करती रही पर सुरेश नहीं आया। बहुत इंतजार

करने के बाद भी सुरेश नहीं आया तो वह मौसी के साथ घर चली गई। हालांकि घर जाने का उसका बिल्कुल भी मन नहीं कर रहा था। उसे लग रहा था कि कहीं वो घर चली गयी और उसके जाने के बाद यदि सुरेश यहां आया तो वह उस से नहीं मिल पाएगी। मगर वह मौसी से क्या कहेगी कि उसे किसी का इंतजार करना है। नहीं- नहीं वह मौसी को अभी कुछ भी नहीं बताएगी और किसी तरह उसने अपने मन को समझाया और मौसी के साथ घर चली गयी। रास्ते भर वह यही सोचती रही कि आखिर आज सुरेश क्यों नहीं आया? वह बहुत दुखी थी और घर पहुँच कर भी उसने किसी से कोई बातचीत नहीं की। चुपचाप अपने कमरे में ही लेटी रही। सुरेश के बारे में ही सोचते सोचते ना जाने उसे कब नींद आ गयी। अगले दिन सुबह भी वह मंदिर पहुँच कर सुरेश का ही इंतजार कर रही थी। वह सोच रही थी कि आखिर क्या बात हैं कि वह दो दिन से दिखाई ही नहीं दे रहा। आने दो, उसे इतनी डाँट लगाउंगी कि याद रखेगा। जब तक नहीं आयेगा मैं यूँ ही उसका इंतजार करती रहूंगी। हाँ! आज भी सुरेश नहीं आया और नीलू उसका इंतजार करके उदास मन के साथ घर चली गयी। उसने खुद को किसी तरह समझया। लेकिन अब धीरे-धीरे उसका धैर्य भी जवाब देने लगा था। उसे सुरेश पर गुस्सा भी आ रहा था। समझता क्या हैं खुद को, न आना हो तो न आएं। मैं भी अब उसका इंतजार नहीं करूंगी। ऐसा लग रहा था जैसे नीलू अपने आप से बातें कर रही हो और खुद को समझा रही हो कि अगर वो मेरे बिना रह सकता हैं तो मैं भी उसके बिना रह सकती हूँ। एक दिन और बीत गया। अगले दिन भी नीलू उसी समय मंदिर में पहुँची, आज भी सुरेश का कुछ पता ना था।अब यह नीलू का रोज का नियम बन गया था की वह मंदिर आती और सुरेश का इंतज़ार करती | इस तरह कई महीने बित गये आज भी वह उदास मन ले कर मंदिर की सीढ़ियों से उतर ही रही थी कि उसे आभास हुआ कि अभी-अभी उसने किसी को देखा जो देखने में बिल्कुल सुरेश जैसा ही प्रतीत हो रहा था। लेकिन जब वह उसके समीप पहुँची तो उसे पता चला कि वह सुरेश नहीं था। केवल उसकी वेश- भूषा सुरेश जैसी थी। एक बार फिर से नीलू की सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। धीरे-धीरे उसने खुद को किसी तरह संभाला और जैसे-तैसे घर तक पहुँची। घर पहुँच कर मौसी ने उसे बताया कि उसकी सहेली पूजा उससे मिलने आई थी और यह शादी का कार्ड दिया हैं और अपनी शादी में बुलाया है। यह चिट्ठी छोड़ कर गयी हैं तेरे लिए। यह सब सुन कर भी नीलू को कोई ख़ुशी नहीं हुई। उसने चिट्ठी ली और अपने कमरे में चली गयी। फिर अनमने भाव से चिट्ठी को एक बार खोला और बंद करके रख दिया। जिसमें लिखा था " प्यारी नीलू तुझे और मौसी जी को मेरी शादी में जरूर आना है। मेरे पास समय कम था शादी की तैयारियों में ही उलझी हुई थी, इसीलिये तुझ से मिल भी नहीं पायी । हो सके तो मुझे माफ़ कर देना।" इस तरह पूजा की शादी का दिन भी आया गया नीलू अपने कमरे आँखें बंद किये हुए लेटी हुई थी कि

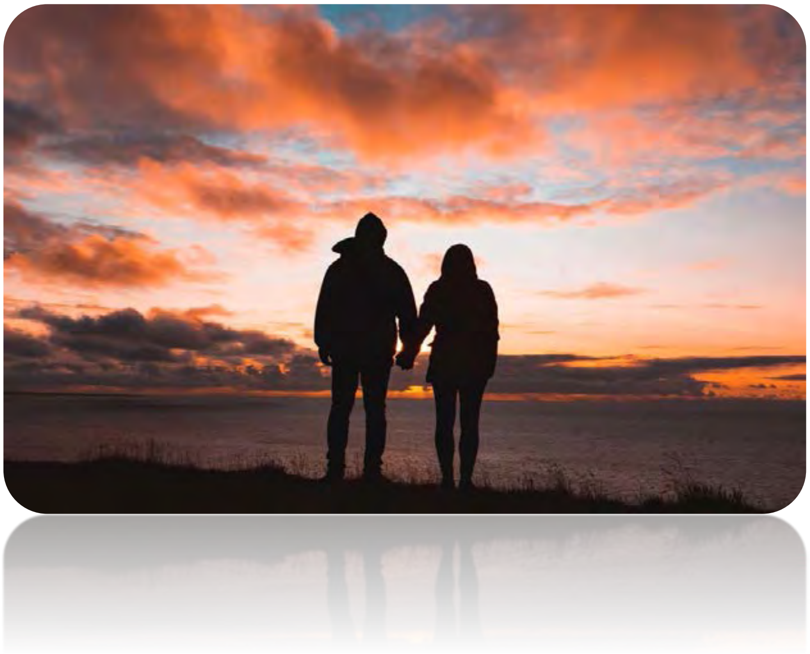

अचानक मौसी के आ जाने से उसकी आँखे खुल गयी और वह उठ कर बैठ गयी। मौसी ने उससे शादी में चलने के लिए तैयार होने को कहा तो उसने कहा कि मौसी मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है। लेकिन मौसी के बहुत जिद्द करने पर वह किसी तरह शादी में चलने को राजी हो गयी। लेकिन शादी में जा कर भी वह खुश नहीं थी। उसे लग रहा था कि वह कब यहाँ से चली जाए। उसने मौसी से कहा कि मुझे कुछ समय अकेला रहना हैं आप पूजा और उसके होने वाले पति को मेरी ओर से बधाई दे देना और उनसे माफ़ी माँग लेना इतना कहकर ही वह वहाँ से बाहर निकली ही थी कि थोड़ी दूर ही रास्ते में उसे सुरेश दिखाई दिया। पहले तो उसे अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ लेकिन जब वह उसके थोड़ा ओर समीप पहुँची तो उसे यकीन हो गया कि वह वास्तव में सुरेश ही है। लेकिन आज वो पहले से कुछ अलग और गंभीर सा लग रहा था आज उसकी आँखों में वह प्रेम नहीं दिख रहा था , और न ही वह प्रसन्नता दिख रही थी। उसने यह चादर क्यों ओढ़ रखी थी? नीलू को कुछ समझ नहीं आ रहा था । लेकिन जो कुछ भी हो नीलू आज बहुत प्रसन्न थी। आज उसे उसकी तपस्या का फल जो मिल गया था। उसका मन हुआ कि वह जा कर उसे जोर से गले लगा ले और उस से पूछे क्या हो गया था तुमको सुरेश?? , तुम कहाँ चले गए थे अपनी नीलू को छोड़कर??। वादा करो, तुम ऐसा दोबारा कभी नहीं करोगे। नीलू अपने मन में यह सब सोच ही रही थी कि तभी सुरेश वहाँ से चलने लगा। तभी नीलू ने आवाज दे कर सुरेश को रोका और उससे पूछा कि आखिर क्या बात हैं सुरेश? आज तुम इतनी जल्दी में हो कि मेरी ओर देखोगे भी नहीं। मुझ से ऐसी क्या भूल हो गयी कि तुम

मुझे इतनी बड़ी सज़ा दे रहे हो। बोलो सुरेश ,कुछ तो बोलो। पर सुरेश पर नीलू की बातों का कोई असर न हुआ जैसे। उसने कहा, नीलू ये तुम क्या कह रही हो? तुम्हारी कोई भी बात मुझे समझ नहीं आ रही है। तुम बेकार में ही मेरे गले पड़ रही हो नीलू। मेरे रास्ते से हटो मुझे देर हो रही है। नीलू ने सुरेश की ओर क्रोध से देखते हुए हुए कहा तो क्या तुम मुझ से प्रेम नहीं करते? सुरेश ने कहा "नहीं..." वह सब तुम्हारा धोखा मात्र था केवल। अब मुझे जाने दो। नीलू को सुरेश की बातों पर यकीन ही नहीं था जैसे। उसने कहा ठीक हैं अगर ऐसी ही बात हैं तो तुम मेरे सर पर हाथ रख कर कसम खाओ और कहो कि तुमने मुझ से कभी प्रेम नहीं किया था। सुरेश ने कहा नीलू यह क्या बचकानी हरकत है? मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला। इतना कह कर वह वहां से चलने लगता हैं कि तभी अचानक जोर से हवा चलती हैं और सुरेश ने जो चादर ओढ़ रक्खी थी वह गिर जाती है। सुरेश को देख कर नीलू के होश उड़ जाते है। उसे ऐसा लगता हैं मानो उसके पैरों तले से धरती खिसक गयी हो। वह चीख पड़ती है- "सुरेश".... उसकी आँखें फटी की फटी रह जाती है। वह उससे पूछना चाहती हैं कि ये सब कैसे हुआ? पर उसके मुँह से आवाज़ ही नहीं निकल रही थी ।उसने कहा सुरेश ये...ये ..सब कैसे?? तब सुरेश उसे समझाते हुए कहता है। हाँ, नीलू यही सच है। नीलू ने उससे पूछा लेकिन ये कैसे हुआ सुरेश। तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? क्या तुम मुझे इस काबिल भी नहीं समझते कि मैं तुम्हारा दुःख बाँट सकूँ? सुरेश ने कहा, नहीं नीलू ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तुमको उदास नहीं देखना चाहता था। ये उस दिन की बात हैं जब मैं बहुत प्रसन्न था और मैं तुम्हें अपने दिल की बात बताना चाहता था। तुमसे मिलने की ख़ुशी में मैं इतना खो गया था कि मुझे सामने से आ रही गाडी की हॉर्न भी सुनाई नहीं दिया और मेरा एक्सीडेंट हो गया जिसमें मुझे अपने हाथ गंवाने पड़े। यह सब सुन कर नीलू को बहुत दुःख हुआ। वह सुरेश की इस हालात की जिम्मेदार खुद को मान रही थी। उसने सुरेश से कहा, सुरेश मुझे क्षमा कर दो। तुम्हारी इस हालत की जिम्मेदार मैं ही हूँ। सुरेश ने उसे समझाते हुए कहा, नीलू इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, यह तो मेरी किस्मत है। तो बोलो नीलू, क्या तुम अब भी इस अपाहिज से विवाह करोगी? नीलू ने सुरेश के होठों पर हाथ रखते हुए कहा, अपाहिज तुम नहीं बल्कि वे लोग हैं, अपनी सोच से, अपनी बुद्धि से जो तुमको अपाहिज समझते हैं और रही विवाह की बात तो मैंने तुमसे प्रेम किया हैं तो किसी ओर से विवाह करने की बात मैं सोच भी नहीं सकती। सुरेश नीलू को समझाने का बहुत प्रयत्न करता हैं लेकिन नीलू उसकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं होती। वह उससे बार-बार कहती हैं कि मैं तुमको छोड़ कर कहीं नहीं जाउंगी सुरेश। मैंने तुम्हारी आत्मा से प्रेम किया है। तुम्हारे शरीर से नहीं और इतना कह कर वह उसके गले लग जाती है।

नीतू कुमारी
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

!!कॉलेज का पहला दिन!!

वह मेरे कॉलेज का पहला दिन था। मेरे लिए सब कुछ बिल्कुल नया था। पहली बार मैं घर से अकेली बाहर निकली थी। इस बात की मुझे बेहद ख़ुशी थी कि मैं अपने पूरे परिवार में पहली लड़की हूँ जिसे कॉलेज जा कर पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। साथ ही मन में एक डर भी था कि कहीं मैं रास्ता न भटक जाऊं या किसी गलत बस में न चढ़ जाऊं। इसके अलावा ऐसे कई सवाल थे जो मन में बार बार आ रहे थे। बहुत कुछ था जो दिमाग में एक साथ चल रहा था, कि न जाने कॉलेज के बच्चे कैसे होंगे, वे मुझ से बात भी करेंगे या नहीं। क्योंकि अब तक टी.वी अथवा फिल्मों में ही कॉलेज के दर्शन किये थे। किंतु जब मैं कॉलेज पहुँची तो मेरा सारा डर ख़त्म हो गया। मैंने देखा यहाँ पर मेरी ही तरह कई थे ,जो अपनी आँखों में न जाने कितने सपने लेकर आये थे। हाँ, कॉलेज के पहले दिन मुझे अपने स्कूल की बहुत याद आई थी। पर क्या पता था कि कॉलेज के ये तीन साल स्कूल के उन बारह सालों से भी अधिक कीमती और मूल्यवान हो जाएंगे मेरे लिए। कॉलेज में आ कर ही मैंने पहली बार जाना किया कि आजादी क्या होती है? पहली बार ये समझा कि खुली हवा में सांस लेना क्या होता है? कुछ ही दिनों में मुझे सब कुछ अपना सा लगने लगा। ये कॉलेज जहाँ मैं डरी-सहमी सी आई थी सब कुछ मेरा अपना हो गया था। यहाँ की अध्यापिकाएं जिनसे बात करने से मैं झिझकती थी, सब मेरे परिवार का हिस्सा हो गयीं थीं और कुछ ही दिनों में मेरे कई सारे मित्र बन गए थे। जिन्होंने मुझे दोस्ती का असली मतलब सिखाया था, जो अब मेरी जिंदगी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। कॉलेज के पहले दिन लगा था कि ये तीन साल न जाने कैसे बीतेंगे।लेकिन अब जब मैं कॉलेज के तीसरे साल में पहुँची हूँ तो ऐसा लगता हैं कि ये तीन साल कितनी जल्दी बीत गए।ऐसा लगता हैं मानो अभी आये ही थे और अभी ही जाने वाले हैं।कॉलेज के ये तीन साल मुझे बहुत बहुत बहुत ही याद आएंगे ।

नीतू कुमारी
बी.ए.(विशेष) हिन्दी
तृतीय वर्ष

मैत्रेयी कालेज

प्रतिबद्धता

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कालेज को ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करना।